दर्शनानन्द-ग्रन्थ-संग्रह

रचयिता

श्री स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

अनुवादक

पं० गोकुलप्रसाद दीक्षित 'चन्द्र'

आयुर्वेद महामहोपाध्याय

श्यामलाल सत्यदेव वर्मा

वैदिक आर्य-पुस्तकालय,

बरेली

मूल्य डेढ़ रुपया

प्रकाशक
श्यामलाल सत्यदेव वर्मा
वैदिक आर्य-पुस्तकालय,
बरेली

मुद्रक
पं० मन्नालाल तिवारी
शुक्ला प्रिंटिंग प्रेस, नज़ीराबाद
लखनऊ.

प्रश्नोत्तर

महाशयगण ! एक दिवस एक नवीन वेदान्ती और आर्य में जीव ब्रह्म की एकता पर प्रश्नोत्तर हुए, जो सर्वजनों के लाभार्थ अङ्कित किये जाते हैं, जिससे वेदान्त के मूल से सज्जन भिज्ञ हो जावें।

आर्य—क्यों महाशय जीव-ब्रह्म में भेद है अथवा नहीं ?

वेदान्ती—अज्ञानी लोग तो भेद मानते हैं; परन्तु ज्ञानियों के विषय भेद नहीं।

आर्य—महाशय ज्ञानी किसे कहते हैं ?

वेदान्ती—जिसे सत्यासत्य का विवेक हो ?

आर्य—जब ब्रह्म एकही दूसरा कोई पदार्थ नहीं तो असत्य कोई पदार्थ नहीं, फिर सत्यासत्य का विवेक कैसे हो सकता है ?

वेदान्ती—भ्राता ! यह जगत् जो प्रतीत होता है, यह असत्य है और ब्रह्म सत्य है एवम् सत्यासत्य का विवेक यही ज्ञान का स्वरूप है ?

आर्य—महाशय ! जो जगत् प्रतीत होता है, वह असत्य कैसे हो सकता है ?

वेदान्ती—जो आदि में न हो और अन्त में भी न रहे, वह मध्य में भी नहीं होता। जगत् क्योंकि उत्पत्ति से पूर्व नहीं था और नाशान्तर नहीं रहेगा। अतएव वर्त्तमान में भी असत्य है ?

आर्य—क्या इस जगत् की उत्पत्ति से प्रथम कभी जगत् था अथवा नहीं ?

वेदान्ती—जगत् न कभी प्रथम था न अब है और न आगे

होगा। केवल भ्रम में प्रतीत होता है—जैसे रस्सी में सांप अथवा सीप में चाँदी का भ्रम होजाता है।

आर्य—महाशय! जब सर्प एक सत्य पदार्थ है और रस्सी भी है तो रस्सी में सर्प का आभास अथवा भ्रम होता है, जब कोई पदार्थ ही नहीं तो उसका भ्रम से कैसे ज्ञान हो सकता है?

वेदान्ती—जैसे स्वप्न में पदार्थाभाव पर भी ज्ञान होता है एवम् पदार्थों के न होने पर भी ज्ञान हो सकता है।

आर्य—स्वप्न में उन्हीं पदार्थों का ज्ञान होता है, जो जागृत दशा में दृष्टि परे हों?

वेदान्ती—स्वप्न में अपना मूड़ कटा हुआ देखते हैं, जो जागृत में कभी नहीं देखा।

आर्य—जब किसी का सर कटा देखा है, तभी सर कटे का ख्याल पैदा होता है और उस कल्पना को अपने साथ मान लिया है।

वेदान्ती—तमाम शास्त्रकारों का सिद्धान्त अर्थात् आखिरी फैसला अभेदवाद में है।

आर्य—न्याय-वैशेषिक-सांख्य-योग-मीमांसा इत्यादि यह सारे ही भेद को प्रकट करते हैं।

वेदान्ती—न्याय इत्यादि तो वेद के विरोधी हैं, वेदान्त-शास्त्र अर्थात् उपनिषदों और शारीरिक सूत्र से तो स्पष्ट अभेद-सिद्ध होता है, वेद का तो सिद्धान्त ही अभेद है?

आर्य—वेद में कहाँ लिखा है कि जीव ब्रह्म का अभेद है?

वेदान्ती—सामवेद में "तत्त्वमसि" महावाक्य मौजूद है।

आर्य—इसको महावाक्य किसने कहा है यह किसी आर्ष-ग्रन्थ का प्रमाण दिया है, सामवेद का वचन तो नहीं यही सामवेद

में है तो दिखलादो, यह छान्दोग्य उपनिषद् का वाक्य है बतलाओ कि इसके अर्थ से किस प्रकार अभेद सिद्ध होता है ?

वेदान्ती—वेदान्त के ग्रन्थों में निश्चलदास इत्यादि ने इसको महावाक्य लिखा है और छान्दोग्य उपनिषद् भी सामवेद ही है और इसका अर्थ यह है "तत्" के अर्थ सो "त्वम्" "असि" अर्थात् सो ब्रह्म तू है।

आर्य—वाक्य के अर्थ तो यह होते हैं कि 'सो तू है' आप ब्रह्म कहां से ले आये हम कहते हैं सो जीव तू है।

वेदान्ती—तत् शब्द पूर्व वाक्य के अर्थ आता है, इससे प्रथम छान्दोग्य उपनिषद् में ब्रह्म का वर्णन है एवम् कहा कि वह ब्रह्म जिसका वर्णन हो चुका है जीव तूही है।

आर्य—छान्दोग्य उपनिषद् में नौ स्थानों में यह शब्द आया है, जिसकी दृष्टि से विदित होता है कि प्रथम जीव का विषय है और उद्यालकजी ने अपने पुत्र श्वेतकेतु, को जिसको शरीर में आत्मा का भ्रम था, उसको शरीर से पृथक् आत्मा दिखाने के हेतु लिखे हैं।

वेदान्ती—अजी तुम कुछ पढ़े लिखे हो नहीं, व्यर्थ क्यों गप्प मारते हो ? छान्दोग्य में इस वाक्य से प्रथम ब्रह्म ही का वर्णन है नहीं तो निश्चलदास पण्डित क्या झूठ लिख सकता है ?

आर्य—महाशय ! हाथ कङ्कन को आरसी क्या है ? आप छान्दोग्य निकाल कर देख लें, आपको स्वयम् विदित हो जावेगा कि निश्चलदास इत्यादि ने सत्य लिखा अथवा झूठ।

वेदान्ती—देखो विचार सागर इत्यादि में इसको महावाक्य और तत् शब्द से ब्रह्म ही का ग्रहण है, छान्दोग्य हमारे पास इस समय नहीं है, नहीं तो अभी दिखला देते कि तुम्हारी सब कल्पना असत्य है।

आर्य—तुमने कभी सामवेद अथवा छान्दोग्य देखा भी है धर्म से कहना।

वेदान्ती—कर्म तो भ्रमजाल है, हमने छान्दोग्य उपनिषद् तो देखा है; परन्तु सामवेद को नहीं देखा।

आर्य—यदि तुमने छान्दोग्य उपनिषद् को देखा है तो उसके प्रथम का पाठ स्मरण होगा, बताओ इससे प्रथम किस विषय का वर्णन है?

वेदान्ती—हमने छान्दोग्य उपनिषद् को देखा तो है; परन्तु इस स्थल को नहीं विचारा।

आर्य—जब आपने यह प्रकरण विचारा नहीं तो किस प्रकार कहा कि इससे प्रथम ब्रह्म का विषय वर्णन है। यदि छान्दोग्य उपनिषद् होती तो निकालकर दिखला देते।

वेदान्ती—क्या तुमने छान्दोग्य उपनिषद् का यह प्रकरण देखा है?

आर्य—हां देखा है।

वेदान्ती—बताओ कैसा पाठ है?

आर्य—

अस्य यदेका ँ शाखां जीवो जहात्यथ सा शुष्यति द्वितीयां जहात्यथ सा शुष्यति तृतीयां जहात्यथ सा शुष्यति सर्वं जहाति सर्वः शुष्यत्येवमेव खलु सोम्य विद्धीति हो वाच। जीवापेतं वाव किलेदं म्रियते न जीवो म्रियत इति स एषोऽणिमैतदात्म्य मिद ँ सर्वंतत्सत्य ँ स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो।

अर्थ—जब इस शरीर के एक भाग को जीव त्याग देता है

तब वह सूख जाता है, जब द्वितीय भाग को त्यागता है तब वह शुष्क हो जाता है, जब तृतीय भाग को त्यागता है तब वह शुष्क हो जाता है, जब सारे शरीर को त्यागता है तब सारा शरीर शुष्क हो जाता है। उद्दालक जी ने कहा इस प्रकार समझो।

आर्य—जीव के पृथक् हो जाने से शरीर मृत्यु को प्राप्त होता है जीव निश्चय नहीं मरता। जब इस अंश को उद्दालक मुनि कह चुके तब प्रश्न उत्पन्न हुआ कि जिसके त्यागने से यह शरीर शुष्क होकर मर जाता है, वह कभी नहीं मरता। वह क्या है तब उसके उत्तर में उद्दालक मुनि ने कहा वह जो सूक्ष्म रूप है जिसका यह शरीर "आतिथ्य" अर्थात् निवास-ग्रह है और उस ग्रह का निवासक आत्मा है वह सत्य है और शरीर में व्यापक है और हे श्वेतकेतु वह आत्मा अर्थात् जीव तू है शरीर नहीं है।

वेदान्ती—तुम आत्मा शब्द से जीवात्मा का क्यों ग्रहण करते हो ?

आर्य—शरीर में व्यापक होने से वह आत्मा जीव है और जो जगत् में व्यापक है ; उसे परमात्मा कहते हैं।

वेदान्ती—यहाँ जब कि आत्मा का विशेषण सत्य दिया गया तो फिर जीवात्मा कैसे हो सकता है ; क्योंकि जीव तो सत्य नहीं अविद्या रूप उपाधि से ज्ञात होता है।

आर्य—यह अविद्या क्या वस्तु है, गुण है, अथवा द्रव्य सत्य है अथवा असत्य।

वेदान्ती—अविद्या सत् असत् से पृथक् और अनिर्वचनीय अर्थात् जिसके विषय कुछ कथन नहीं कर सकते, ऐसा पदार्थ है।

आर्य—क्या तुम्हारे इस अविद्या के होने में कोई प्रमाण है यदि प्रमाण है तो वह प्रमेय है अर्थात् एक-एक पदार्थ अनिर्वच-

नीय किस प्रकार हो सकता है, यदि कोई प्रमाण नहीं तो उसके होने का क्या प्रमाण है।

वेदान्ती—हमारे मत में अविद्या वह वस्तु है जो ब्रह्म के एक देश में रहती है और उसको सत् असत् कुछ भी नहीं कह सकते।

आर्य—क्या ब्रह्म में अविद्या रहती है और ब्रह्म से पृथक् है अथवा ब्रह्म ही है।

वेदान्ती—हम प्रथम ही कह चुके हैं कि वह अनिर्वचनीय है एवम् ब्रह्म से पृथक् नहीं कह सकते, क्योंकि इस दशा में द्वैत सिद्ध होता है—जैसे जल में बुलबुला अथवा लहर उठती है क्या वह जल से पृथक् होती है हम तो इसे अनिर्वचनीय ही कहेंगे; क्योंकि वह न तो जल से पृथक् है और न वह जल ही है।

आर्य—ऐसा कोई पदार्थ ही नहीं जो सत असत से पृथक् हो। अतएव तुम्हारी अविद्या का होना ही सिद्ध नहीं।

वेदान्ती—हम तो वैशेषिक की भाँति षट् पदार्थ वादी हैं और न न्याय की भाँति १६ पदार्थ मानते हैं, एवम् तुम हमारी अविद्या का खण्डन नहीं कर सकते।

आर्य—

अनियतत्वेपिनऽयौक्तिकस्य संग्रहोऽन्यथा बालोन्मत्ता-दिसमत्वम् ॥ सां० सू० ॥

अर्थ—चाहे तुम नियत पदार्थ न भी मानो तो भी अयुक्त पदार्थ को नहीं ले सकते, यदि अयुक्त पदार्थों को ग्रहण करोगे तो तुम्हारे अविद्यालक और उन्मत्त कहने में क्या भेद होगा, तब पागल की व्यर्थ बातों को ठीक मानना पड़ेगा।

वेदान्ती—अजी यह सब बातें तो व्यवहार की हैं, परमार्थ में यह सब मिथ्या हैं; क्योंकि हम तो यह जानते हैं:—

श्लोकार्द्धेन प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ग्रन्थकोटिभिः । ब्रह्म-सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव केवलः ॥

अर्थ—हम उस विषय को अर्ध श्लोक में कहेंगे, जिसको करोड़ों ग्रन्थों में कहा गया है, वह विषय यह है कि ब्रह्म सत्य है और जगत् मिथ्या है, जीव केवल ब्रह्म है और कुछ नहीं।

आर्य—क्योंजी यह जगत् सर्वथा मिथ्या है ?

वेदान्ती—हाँ सचमुच मिथ्या है।

आर्य—तो तुम्हारा श्लोक सत्य है अथवा मिथ्या।

वेदान्ती—यह भी मिथ्या है।

आर्य—तुम्हारा वचन सत्य है अथवा मिथ्या।

वेदान्ती—मिथ्या है।

आर्य—तो जगत् सत्य सिद्ध हो गया; क्योंकि जिस वाणी से आपने कहा, वह जब मिथ्या हुई और जो श्लोक है वह मिथ्या है तो जिसको तुमने मिथ्या वाणी से मिथ्या कहा वह सत्य सिद्ध हो गया और जब जीव को कहना मिथ्या हुआ तो जीव ब्रह्म भी सत्य सिद्ध हो गया।

वेदान्ती—जब तक अज्ञान है, तब तक भेद है जब ज्ञान हो जाता है तो भेद स्वयम् ही दूर हो जाता है।

आर्य—ज्ञान किसे कहते हैं।

वेदान्ती—भ्रम से जो भेद ज्ञात होता है और अपने आप को जीव समझता है यह अज्ञान और जब स्वयम् ब्रह्म समझने लग जावेगा तो ज्ञान हो जावेगा जैसे एक शेर का बच्चा किसी गड़रिये के हाथ आ गया और उसने उसे बकरियों के साथ चराना आरम्भ किया, वह शेर अपने आपको बकरी समझने लगा एक दिवस अन्य शेर आ गया, उसे देखकर बकरी भयभीत

होकर भागने लगीं, वह शेर भी उनके साथ भागने लगा, तब शेर ने देखा कि वह अज्ञान से अपने को बकरी समझता है, एवम् उसने उसका रूप पानी में दिखलाकर कहा कि तू बकरी नहीं शेर है, तब उसका अज्ञान जाता रहा, ऐसे ही जीव ब्रह्म हैं ; पर भ्रम से जीव समझता है।

आर्य—यह तुम्हारा दृष्टान्त सत्य है या मिथ्या।

वेदान्ती—व्यवहार दशा में सत्य है और परमार्थ दशा में मिथ्या है।

आर्य—तुम्हारा यह व्यवहार और परमार्थ दशा का ज्ञान सत्य है अथवा मिथ्या।

वेदान्ती—मिथ्या।

आर्य—एवम् तुम्हारा तो मिथ्या ज्ञान हो गया और ज्ञान का भेद है अथवा अभेद।

वेदान्ती—जिस प्रकार बहुत से घड़ों में सूर्य का प्रतिबिम्ब ज्ञात होता है, अज्ञानी तो यह समझते हैं कि बहुत सूर्य हैं और ज्ञानी समझता है कि सूर्य तो एक है, उपाधि से पृथक्-पृथक् ज्ञात होते हैं।

आर्य—तुम्हारी उपाधि सत्य है अथवा असत्य और ज्ञान का फल अभेद कैसे कह सकते हो ; क्योंकि ज्ञान तो सत्य को सत्य और असत्य को असत्य और सत्यासत्य में भेद बतलाता है, अन्धा जिसको रूप ज्ञान नहीं, उसको सबका रूप अभेद है और आँखवाले को रूप में भेद ज्ञात होता है।

वेदान्ती—उपाधि व्यवहार दशा में सत्य और परमार्थ में मिथ्या है।

आर्य—तुम्हारे व्यवहार परमार्थ दशा का भेद ज्ञान है अथवा अज्ञान।

वेदान्ती—ज्ञान है।

आर्य—तुम प्रथम कह चुके हो कि भेद अज्ञान का फल है, अब तुम भेद को ज्ञान मानते हो।

वेदान्ती—यह ऐसा विषय है जिसको कुछ कह नहीं सकते; क्योंकि जो कुछ कहा जायगा, वह जगत् में होगा और जगत् मिथ्या है। अतएव ज्ञान अनुभव का विषय है।

आर्य—तुम कितने पदार्थ अनादि मानते हो।

वेदान्ती—हम ६ पदार्थ अनादि मानते हैं।

आर्य—कौन ६ पदार्थ ?

वेदान्ती—जीव, ईश्वर, ब्रह्म और उनका भेद और माया और उनका उनसे मिलाप यह ६ पदार्थ अनादि हैं।

आर्य—जीव किसे कहते हैं और ईश्वर किसे कहते हैं ?

वेदान्ती—शुद्ध सत्व प्रधान तो ईश्वर है और मलिन सत्व प्रधान जीव है अथवा माया उपाधि से युक्त चैतन्य को ईश्वर कहते हैं और अविद्या उपाधि युक्त चैतन्य को जीव कहते हैं।

आर्य—क्या अविद्या और चैतन्य का योग अनादि हो सकता है; क्योंकि योग क्रिया है, जो विना काल के हो नहीं सकती और जो काल की सीमा में आ गया, वह अनादि कैसे हो सकता है और जो अनादि है वह नित्य भी होता है।

वेदान्ती—यह सब अज्ञान की बातें हैं, हम ५ को अनादि सअन्त और एक को अनादि अनन्त मानते हैं।

आर्य—क्या तुमने कभी एक किनारे की नदी देखी है ?

वेदान्ती—नहीं देखी।

आर्य—तो अनादि सान्त कैसे हो; क्योंकि जो पैदा होता है, वही नाश होता है और जो उत्पन्न नहीं होता, वह नाश भी नहीं होता, अतएव जिसका आदि है उसका अन्त है, जिसका

आदि नहीं उसका अन्त नहीं ; क्योंकि इसमें दृष्टान्त का अभाव है।

वेदान्ती—घट वनने से प्रथम जो घट का अभाव था—उसका आदि तो है ही नहीं। इस कारण अनादि है और घट के वनते ही नाश हो जाता है अतएव अनादि भी सअन्त होता है।

आर्य—तुम्हारा यह कथन सर्वथा अयुक्त है ; क्योंकि घट की उत्पत्ति से प्रथम घट शब्द ही नहीं था तो उसका अर्थ किस प्रकार हो सकता है यदि कहो कि घट शब्द था तो उसका प्राग् अभाव कैसा ? यदि कहो नहीं था तो उसका अभाव वतलानेवाला न होने से सिद्ध नहीं और दृष्टान्त भाव पदार्थ का होना चाहिए।

वेदान्ती—सारे प्राचीन ग्रन्थों में ५ अनादि शान्त माने जाते हैं और एक अनादि अनन्त ; तो क्या यह अयुक्त है।

आर्य—यह अयुक्त तो नहीं, तुमने इसके समझने में गड़वड़ डाल दी है। सुनो आदि और अन्त दो प्रकार से होता है—एक विस्तार भेद से, जिस प्रकार एक ग्रह एक सिरे से आरम्भ होता है वह उसका आदि है और जिस सिरे पर समाप्त होता है वह उसका अन्त है, द्वितीय वह ग्रह जिस दिवस वना है, वह उसका आदि है और जिस दिवस नाश होगा वह उसका अन्त है, अतएव ६ पदार्थ काल से अनादि हैं अर्थात् उनकी उत्पत्ति नहीं और काल भेद से अनन्त भी हैं ; क्योंकि उनका नाश नहीं होता ; परन्तु ५ पदार्थ देश भेद से अन्त वाले हैं और ब्रह्म देश व काल दोनों भेद से अनन्त और अनादि हैं।

वेदान्ती—यह तुम्हारा कपोलकल्पित अर्थ है ; क्योंकि वह अनादि सान्त और अनादि अनन्त है, तुम किस शब्द से देश व काल ले आये !

आर्य—यह नियम है कि जहाँ वक्ता के कथन का अर्थ

समझना असम्भव ज्ञात हो, वहाँ लक्षणा की जाती है। जैसे कोई मनुष्य रेल में बैठा हुआ कहता है कि लाहौर आ गया, किन्तु जाना आना करना लाहौर में तो है नहीं, यहाँ स्पष्ट अर्थ यह होता है कि हम लाहौर पहुँच गये। इसी प्रकार के अधिक दृष्टान्त उपस्थित हैं; क्योंकि एक किनारे की नदी अथवा अनादि का सान्त होना असम्भव है, अतएव यह अर्थ ठीक है।

वेदान्ती—जीव ब्रह्म को पृथक् मानने में दुःख ही दुःख है शान्ति कभी होती नहीं और श्रुति में लिखा है—"द्वितीयात्भयं भवति" अर्थात् दूसरे से भय होता है।

आर्य—बेशक दूसरे से भय होता है; परन्तु भय से मनुष्य पाप से बचकर शान्ति पा जाता है और निर्भय मनुष्य पाप करके दुःख भागी होता है।

वेदान्ती—यह पाप पुण्य का सब झगड़ा झूंठा है, जब यह सब झूठा है तो क्यों भेद बुद्धि करके भय में पड़ें।

आर्य—तो क्या यह भय और भेद बुद्धि सत्य है ?

वेदान्ती—नहीं सब मिथ्या है।

आर्य—तो मिथ्या के वास्ते सत्य को क्यों त्यागा जावै ?

वेदान्ती—तुम्हारी बुद्धि में भ्रम पड़ गया है, जिससे तुमको जीव भाव का निश्चय हो रहा है। जब भ्रम दूर हो जायगा, तब अपने को ब्रह्म समझने लगेगा।

आर्य—क्या तुम्हारा यह कथन सत्य है ?

वेदान्ती—मिथ्या है।

आर्य—जब तुम्हारा कथन परमार्थ में मिथ्या है तो हमारी बुद्धि में भ्रम नहीं है, जो मिथ्या बोलता है, उसीकी बुद्धि में भ्रम है।

वेदान्ती—हम सर्व जगत् को आत्मा स्वरूप समझते हैं; क्योंकि उससे शान्ति की प्राप्ति होती है।

आर्य—क्या तुम अचैतन्य पदार्थों को भी आत्मा समझते हो ?

वेदान्ती—यह चैतन्य वा अचैतन्य कहना केवल भ्रान्ति है; किन्तु कोई चैतन्य और अचैतन्य नहीं, केवल ब्रह्म है।

आर्य—तुम्हारे ब्रह्म का क्या स्वरूप अथवा लक्षण है ?

वेदान्ती—ब्रह्म सच्चिदानन्द स्वरूप है।

आर्य—सच्चिदानन्द किसे कहते हैं ?

वेदान्ती—सत् कहते हैं तीन काल में रहने वाले को, चित् कहते हैं ज्ञानवाले को, आनन्द कहते हैं दुःख रहित को।

आर्य—तुम इतना क्यों कहते हो केवल सत् क्यों नहीं। कहते हो; क्योंकि ब्रह्म के अतिरिक्त कोई पदार्थ सत् है ही नहीं

वेदान्ती—यद्यपि हमारे मत में ब्रह्म से पृथक् कोई पदार्थ नहीं; परन्तु सांख्यवाले प्रकृति को न्यायवाले परमाणु को सत् मानते हैं अतएव प्रकृति से पृथक् करने के लिये चित् कहना पड़ा और न्यायवाले जीवात्मा को भी चैतन्य मानते हैं और सत् भी कहते हैं। अतएव हमने आनन्द कहा—बस अब प्रकृति और जीव से ब्रह्म पृथक् हो गया और लक्षण पृथक् कर्ता को कहते हैं।

आर्य—तब लक्षणानुसार तो भेद जाता रहा, अब तो जीव, ब्रह्म और प्रकृति को पृथक्-पृथक् मान लिया।

वेदान्ती—यह लक्षण आदि सब व्यवहार दशा में हैं, परमार्थ में सब मिथ्या हैं और अज्ञान दशा में भेद हम भी मानते हैं।

आर्य—तुम्हारा यह कहना सत्य है या मिथ्या।

वेदान्ती—मिथ्या है।

आर्य—बस मित्र ! जब तुम्हारी प्रत्येक बात मिथ्या है तो

तुम्हारा अद्वैतवाद अर्थात् जीव ब्रह्म के एक होने का मामला किस प्रकार सत्य हो सकता है ; क्योंकि मिथ्या प्रमाण से जो ज्ञान हो, उसे कोई बुद्धिमान् सत्य नहीं मान सकता।

वेदान्ती—अच्छा अब आज तो हम जाते हैं ; पुनः किसी दिन आकर तुमसे बातचीत करेंगे।

आर्य—मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने इतनी देर तक सत्यासत्य का निर्णय किया।